संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति करो, मसीह में प्रिय पाठकों। ऐसा लगता है कि वर्ष अभी शुरू ही हुआ है, फिर भी हम पहले से ही वर्ष के दूसरे महीने में हैं!

यशायाह 40:11 ''वह चरवाहे के समान अपने झुण्ड को चराएगा, वह भेड़ों के बच्चों को अँकवार में लिए रहेगा और दूध पिलानेवालियों को धीरे–धीरे ले चलेगा।''

हमारा परमेश्वर एक प्रेम करने वाला परमेश्वर है जो हम से बहुत प्रेम करते है। वह ऐसा परमेश्वर है जो हमें हमारी कमियों के साथ भी स्वीकार करते है। वह हमारी क्षमताओं और हमारी योग्यताओं को जानते है। वह हमारी उपलब्धियों और हमारी असफलताओं को जानते है। वह उन लोगों का उद्धार करेंगे जो कमजोर हैं और उनके जीवन में उनका नेतृत्व करेंगे। वह उन्हें इतना दृढ़ करेंगे कि वे जीवन और उसके साथ आने वाली सभी परीक्षाओं और क्लेशों का सामना कर सकें।

भजन संहिता 32:8 कहता है, ''मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा।'' लेकिन, हमारे लिए यह आशीष तभी है जब हम परमेश्वर की छाया और उनके शक्तिशाली अनुग्रह के हाथ में रहते हैं। प्रत्येक दिन हमें अपने परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि वह हमारा हाथ थामे रहते हैं और हमारी अगुवाई करते हैं, केवल हमारे लिए सबसे अच्छा करते हैं। हमें परमेश्वर के प्रत्येक वचन को स्वीकार करना चाहिए, खुशी–खुशी अपने दिलों को खोलना चाहिए, और हमेशा आत्मारिक रूप से अधिक से अधिक बढ़ने की तीव्र इच्छा रखना चाहिए। तभी परमेश्वर हमें वचन को समझने के लिए अपनी दिव्य बुद्धि से आशीष देंगे। नीतिवचन 1:23 कहता है, ''तुम मेरी डाँट सुनकर मन फिराओ; सुनो, मैं अपनी आत्मा तुम्हारे लिये उण्डेल दूँगी, मैं तुम को अपने वचन बताऊँगी।''

हम जो भी काम करते हैं, उसमें हमें यह याद रखना चाहिए कि हम परमेश्वर के चुने हुए हैं। केवल वे ही जो उस पर विश्वास करते हैं, हमारे परमेश्वर, 'अब्बा पिता' को बुलाने के योग्य हैं, और उनके बेटे और बेटियां हैं। यूहन्ना 1:12 ''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।'' हम निश्चय ही विशेष लोग हैं जिन्हें उनके लिए पराक्रमी और महान कार्य करने के लिए बुलाए गए है।

1 कुरिन्थियों 4:7 हमसे पूछता है, ''क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया? और जब कि तू ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया?'' इसका क्या जवाब है? 1 कुरिन्थियों 3:6 ''मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।''

हमारे पास क्या है, और हम क्या हैं? प्रभु के बिना हम 'कुछ नहीं' हैं। हम दिन–रात मेहनत कर सकते हैं, लेकिन यह हमारा प्रभु ही है जो हमें हमारे श्रम के फल के साथ आशीष देते है। यदि प्रभु हमारे साथ नहीं है, तो हम जो कुछ भी करते हैं वह अयोग्य और व्यर्थ है। जैसा कि नीतिवचन 21:31 कहता है, ''युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।''

इसलिए प्रिय भाइयों और बहनों, अपने जीवन के हर सांस के साथ प्रभु को धन्यवाद देना न भूलें, न ही उन्होंने आपके लिए किए गए अच्छे कामों को भूलें, क्योंकि आभारी दिल आपके भविष्य के आशीषों को प्राप्त करने की कुंजी है!

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

भलाई का काम करने में न थकें।

यूहन्ना 16:33 ''मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कहीं हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।'' पवित्रता और विजय का जीवन किसी को भी आसानी से नहीं मिलता, इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। हमें जीवन में बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उससे लड़ना पड़ता है और तभी हम जीत की जिंदगी जी सकते हैं। जिस प्रकार एक सुनार सोने को भट्टी में डालता है और उसे तब तक शुद्ध करता रहता है जब तक कि उसे कान की बाली, चूड़ी, गले की माला या आभूषण बनाने के लिए आवश्यक शुद्धता नहीं मिल जाती। हमारे विश्वास को बार–बार परखने से ही प्रभु हमारे भीतर उस दृढ़ विश्वास को देख सकते हैं। आइए हम पढ़ें 1 पतरस 1:7 ''और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान् सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।'' एक दिन जब इस संसार के सारे दुख–दर्द समाप्त हो जाएंगे, तब हमारा जीवन प्रभु की स्तुति का जीवन बन जाएगा। दाऊद भजन संहिता 119:71 में कहता है ''मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है, जिससे मैं तेरी विधियों को सीख सकूँ।'' हमारे जीवन में जो दर्द और पीड़ा अनुभव किया जाता है, वह हमें नष्ट नहीं करता है, बल्कि यह हमारी निष्ठा को केवल प्रभु में विश्वास करने के लिए दृढ़ करता है और हमारे जीवन को केवल उनकी महिमा के लिए प्रशंसा के योग्य बनाता है। इस प्रकार दाऊद कहते हैं, "यह अच्छा है कि मैंने आपके लिए दुःख उठाया, हालांकि इन सभी कष्टों के माध्यम से मैंने अद्भुत सबक सीखा है।" रोमियों 8:28 कहता है ''हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।'' जैसा कि हम पवित्र शास्त्र में जानते हैं कि यूसुफ का जीवन संघर्ष और पीड़ा का जीवन था, लेकिन एक दिन प्रभु परमेश्वर ने उसे मिस्र में ही ऊपर उठाया और उसे फिरौन के अतिरिक्त पद दिया गया। इस प्रकार, यूसुफ ने सोचा कि उसकी हर पीड़ा उसके जीवन में सबसे अच्छा काम करती है। हमारे जीवन में भी, पवित्रता और विजय का जीवन प्राप्त करने के लिए, हमें बहुत सारे परीक्षणों, क्लेशों, कष्टों और पीड़ाओं से भी गुजरना होगा। जब हम इन सब पर विजय प्राप्त कर लेंगे, तब हमारा जीवन विजयी होगा। रोमियों 12:12 कहता हैं, ''आशा में आनन्दित रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो।'' हमारे परीक्षण और क्लेशों के समय के दौरान, हमें दृढ़ता से परमेश्वर के साथ रहना चाहिए और अपने विश्वास और उन पर भरोसा रखने में दृढ़ रहना चाहिए।

हम जानते हैं कि कैसे अय्यूब के विश्वास की परीक्षा हुई। वह शैतान परमेश्वर के सामने गया और उन्हें अय्यूब के बारे में चुनौती दी और कहा, "यदि तुम अय्यूब के चारों ओर की सुरक्षा छीन लो, और उसे परीक्षा और क्लेश दो, तो वह आपको भूल जाएगा और आपके विरुद्ध कुड़कुड़ाएगा"। दुष्ट सदैव प्रतीक्षा करता है कि हम परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाएँ। हमें खुश रहना बंद कर देना चाहिए, प्रार्थना करना बंद कर देना चाहिए और प्रभु के प्रति अहसान फरामोश होना चाहिए। यह वही है जो शैतान हमेशा चाहता है कि परमेश्वर के बच्चे ऐसा करें। इस प्रकार, जब हम परीक्षणों और क्लेशों से गुजरते हैं, तो हमें प्रभु को अधिक स्वीकार करना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि हमारे जीवन में सब कुछ अच्छे के लिए होता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अपने परीक्षणों और क्लेशों के दौरान विश्वास में दृढ़ होंगे और हम अपने प्रार्थना जीवन में भी दृढ़ होंगे। जब हम प्रभु में मजबूत नहीं होते हैं, तब हम जीवन में चिंता करते रहते हैं और हम डूबने लगते हैं। जिन लोगों को प्रभु परमेश्वर ने बुलाया है, यदि उनके जीवन विजयी हैं, तो याद रखें कि वे सफाई की भट्टी से गुजरे हैं और उनके विश्वास को कई बार परखा गया है। नीतिवचन 3:11 कहता है ''हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुँह न मोड़ना, और जब वह तुझे डाँटे, तब तू बुरा न मानना,'' जब हम कष्ट सहते हैं या परीक्षाओं और क्लेशों से गुजरते हैं तो हमें कभी भी कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए, यह उस समय होता है जब प्रभु हमारे विश्वास की परीक्षा लेते हैं। इस्राएली हर समय कुड़कुड़ाते थे, हर समय उनकी परीक्षा होती थी, लेकिन वे हर समय कुड़कुड़ाते थे और परमेश्वर के खिलाफ कुड़कुड़ाते थे, इसके बावजूद कि उनके ऊपर अनुग्रह का शक्तिशाली हाथ था, वे फिर भी कुड़कुड़ाते थे। जब वे पाप करके परमेश्वर के

विरुद्ध गए, तब परमेश्वर ने उन्हें शत्रु के हाथ में कर दिया, कि वे दुःख उठाएं, कि वे एक मत और एक होकर यहोवा परमेश्वर की दोहाई दें। एक बार फिर हमारे अनुग्रहकारी परमेश्वर उन्हें अपने अपार प्रेम से फिर से ऊपर उठाएं। हमारे जीवन में भी, जब परमेश्वर हमारे पापों या दोषों को उस समय दिखाते है, तो हमें प्रार्थना में नहीं थकना चाहिए और पश्चातापी मन से हमें एक बार फिर से उसे पुकारना चाहिए और खुशी में हमें उसकी स्तुति और प्रार्थना करनी चाहिए। आइए हम इब्रानियों 12:5–11 को पढ़ें ''और तुम उस उपदेश को, जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो : "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़। क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।" तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे। फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें। वे तो अपनी–अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ। वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते–सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।'' प्रभु परमेश्वर हम पर नाराज हो जाते हैं और हमारे जीवन में सजा लाते हैं, क्योंकि वह हमसे प्यार करते हैं और हमें सुधारना चाहते हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर जो करता है वह न केवल वर्तमान समय के लिए है, बल्कि हमारे जीवन में आने वाले समय के लिए भी है।

हम जानते हैं कि दाऊद ने बेतशेबा के साथ पाप किया था और यह एक बड़ा पाप था, परमेश्वर ने दाऊद को अपना पाप दिखाने के लिए नबी नातान को भेजा। दाऊद ने शीघ्र ही अपने पाप को स्वीकार किया और सुधार लिया, उसने पश्चाताप किया और क्षमा पाने के लिए प्रभु परमेश्वर के आगे रोया। परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया और एक बार फिर से उनकी महिमा के लिए उसका उपयोग करना शुरू कर दिया। क्योंकि दाऊद इस्राएल का राजा था, परमेश्वर ने उस पर दया करके उसके पापों को छिपाया नहीं, बल्कि उसने दाऊद को खुलेआम डांटा। हमारे जीवन में भी, हम परमेश्वर से कितना ही प्रेम करते हैं, हम उसके बहुत करीब हो सकते हैं, परमेश्वर के सामने कोई बड़ा या छोटा नहीं है, परमेश्वर के सामने पाप पाप है। वह हमारे पापों को नहीं छिपाता, वह अपने चुने हुए सेवकों के द्वारा आज भी हम से बातें करते है। हमें हर सुधार को स्वीकार करना चाहिए और अपना जीवन बदलना चाहिए। हम जानते हैं कि दाऊद ने अपने जीवन में एक बार फिर से प्रभु की कृपा और दया पाने के लिए उनके सामने कितना रोया। एक ओर दाऊद का व्यभिचार और दूसरी ओर उसने उसके पति को मार डाला। एक राजा होने के नाते, वह युद्ध में नहीं गया, बल्कि वह बेतशेबा के खिलाफ योजना बनाने के लिए रुख गया। परन्तु परमेश्वर ने अन्त में दाऊद को इन सब पापों से छुड़ाया, क्योंकि उसने परमेश्वर के सामने सच्चे ह्रदय से मन को फिराया। इसी तरह हमें भी परमेश्वर के सामने अपने पापों को सच्चाई से स्वीकार करना चाहिए और उनकी क्षमा प्राप्त करनी चाहिए। हमारा पश्चाताप ओठों से और आंसू से नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें सच्चाई से प्रभु के लिए पश्चाताप करने वाला ह्रदय रखना चाहिए। इस वजह से हमारे बहुत से पाप अभी भी परमेश्वर द्वारा क्षमा नहीं किए गए हैं। आज क्रूस पर यीशु मसीह के बलिदान के बावजूद, हम अभी भी पूरी तरह से शुद्ध नहीं हुए हैं। हमारा दिल पूरी तरह से पश्चाताप नहीं करता है और हमने अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार नहीं किया है। दाऊद परमेश्वर के सामने पूरी तरह से पश्चाताप कर रहा था, परमेश्वर के सामने उसका ह्रदय पछताया हुआ था, इस प्रकार परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया और उसके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। परमेश्वर कल और आज और युगानुयुग एक–सा है। जब हम सच्चाई से पश्चाताप करते हैं, तो वह हमें तुरंत क्षमा करने और हमारे पापों से हमें पूरी तरह से मुक्त करने के लिए तैयार है। हमारा विश्वास दाऊद के विश्वास जैसा होना चाहिए। भजन संहिता 139:23–24 ''हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!'' हमारी प्रार्थना प्रभु के सामने एक पश्चाताप प्रार्थना होनी चाहिए। जैसे दाऊद

ने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, मुझे जाँच ले, और मेरे मन को परख ले; मेरी परीक्षा ले, और मेरे विचारों को जाँच ले। और देख कि मुझ में कोई दुष्टता तो नहीं है, और सदा के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।" मेरे जीवन में दुख–दर्द के सारे रास्ते बदल दो और मुझे सुख की राह दिखाओ। यह दाऊद की सच्ची प्रार्थना थी। जब हमारे जीवन में पाप होता है, तो हमारा जीवन अंधकार, दर्द और दुख में चला जाता है। लेकिन जब हम अधर्म से फिरेंगे और एक बार फिर धर्म के मार्ग पर चलेंगे, तो परमेश्वर हमें अपनी महिमा के लिए फिर से उठाएंगे। प्रभु एक बार फिर हमारे दिलों की गहराई में देखेंगे, इसकी जांच करेंगे और फिर एक बार हमें अपने जीवन में अपनी कृपा और दया से आशीष देंगे। लेकिन, हम में से कई लोग इसे केवल अपने होठों से कहते हैं और ऐसा नहीं करते हैं, जबकि हम में से कई लोग अपने दिल से पूरे मन से पश्चाताप नहीं करते हैं। याद रखें, प्रभु हमेशा हम पर नजर रखे हुए हैं। परमेश्वर ने बहुतों को बुलाया है परन्तु अपनी महिमा के लिए कुछ ही को चुना है। जो लोग अपने सच्चे दिल से पश्चाताप करते हैं, प्रभु निश्चित रूप से उन्हें ऊपर उठाएंगे और उन्हें अकेले अपनी महिमा के लिए चुन लेंगे। पवित्रता का जीवन जीने के लिए जरूरी है कि हम भट्टी में जाएं और उससे पूरी तरह से शुद्ध हो जाएं। नीतिवचन 13:18 कहता है ''जो शिक्षा को सुनी–अनसुनी करता वह निर्धन होता और अपमान पाता है, परन्तु जो डाँट को मानता, उसकी महिमा होती है।'' हाँ, जो सुधार को स्वीकार करते हैं, वे प्रभु के द्वारा सम्मानित होंगे, लेकिन जो सुधार का तिरस्कार करते हैं, वे लज्जित होंगे। जब परमेश्वर बकरी और भेड़ को अपने बाएँ और दाएँ भाग में अलग करते है, तो उस समय हमें पता चल जाएगा कि हम उसके साथ कहाँ खड़े हैं? आज, यदि हम उनका सुधार नहीं लेते हैं, तो उस दिन हमारे लिए दुखद होगा। लेकिन अगर हम आज उनका सुधार लें, तो उस दिन हमें सम्मानित किया जाएगा। पवित्रता और विजय का जीवन हमारा होगा। हमारे जीवन में केवल उनका सुधार ही हमें इस जीवन में विजयी होने में मदद करेगा और आने वाले जीवन में हमें सम्मानित किया जाएगा। कल्पना कीजिए, अगर हम सुधार को स्वीकार नहीं करते हैं तो वह दिन हमारे जीवन में कितना शर्मनाक दिन होगा। प्रभु हमें सुधारते हैं क्योंकि हम उनके बच्चे हैं, वह चाहते हैं कि हम सम्मान का जीवन जिएं और हमें उनके द्वारा तैयार किये गए स्थान तक पहुंचना चाहिए। इस प्रकार वह हमें इस संसार में ताड़ना देते है। उस समय हमें उनके सुधार को खुले विचारों से लेना चाहिए, हमें सुस्त और थके हुए नहीं होना चाहिए, बल्कि स्वेच्छा से हमें उनके सुधार और प्रगति को परमेश्वर के साथ लेना चाहिए।

आइए हम पढ़े इब्रानियों 12:3 ''इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।'' गतसमनी के वाटिका में, यीशु की आत्मा इतनी कष्ट में थी क्योंकि वह उस बगीचे में थे, उस समय, उन्होंने हमारे पापों को अपने ऊपर लेने का फैसला किया और हमारे लिए खुद को क्रूस पर दे दिया। यीशु ने अपने पिता परमेश्वर को ज़ोर से पुकारा, यीशु पिता परमेश्वर के सामने रोए, लेकिन उनके पिता की इच्छा थी कि वह मर जाए और हमारे लिए बलिदान किए जाए। इस प्रकार, हमारे लिए यीशु के क्रूस पर दिया गया बलिदान को याद रखना चाहिए। हमें अपने जीवन में कभी भी बड़बड़ाना और कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए। यह तब होता है जब हम यीशु के इस बलिदान को हमारे लिए भूल जाते हैं, जिस दर्द और दुख से वह गुजरे। हाँ, जब हम अपने जीवन में थकान या मुश्किलों का सामना करते हैं, तो हम परमेश्वर पर कुड़कुड़ाते और बड़बड़ाते हैं, लेकिन उस क्षण जब हम केवल यीशु की पीड़ा को याद करते हैं, और याद करते हैं कि कैसे उनका पसीना रक्त की बूंदों में बदल गया, हम फिर कभी परमेश्वर को न हीं कुड़कुड़ाएंगे और न ही बड़बड़ाएंगे। हमें अपने प्रभु के बलिदान को हमेशा याद रखना चाहिए, तभी हम अपने प्रार्थना जीवन में विकास करेंगे और साथ ही प्रभु के प्रति सम्मान भी करेंगे। यशायाह 53:12 ''इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया, तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है।'' हाँ, यीशु ने सारी मानव जाति के पापों को उठाया, वह इस संसार के पापों के लिए बलिदान किया गया था। हमें यह याद रखना चाहिए कि कैसे पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस पर बलिदान किया था। यशायाह 53:11 कहता हैं ''वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।'' जब हम इस दुनिया में

दर्द और पीड़ा से गुजरते हैं, तो हमें यीशु के दुखों को याद रखना चाहिए और उनकी तुलना में हमारी पीड़ा जो यीशु मसीह ने क्रूस पर उठाई, उनके दुख की तुलना में कुछ भी नहीं है। हमें अपना विश्वास और भरोसा प्रभु परमेश्वर पर और भी अधिक रखना चाहिए और उनके पवित्र नाम की स्तुति और आराधना और महिमा करनी चाहिए। हमारे हृदयों को एक बार फिर प्रभु परमेश्वर का गुणगान करना चाहिए। आइए हम पढ़ें भजन संहिता 23:3 ''वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।'' जब हम उन्हें पुकारेंगे, तो वह निश्चय सुनेंगे और हमें उत्तर देंगे। यही कारण है कि उन्होंने गतसमनी के बगीचे में दुख उठाने का चुनाव किया और हमें धार्मिकता का मार्ग दिखाने के लिए क्रूस पर हमारे लिए मरने का फैसला किया। यीशु के जन्म से पहले भी, भविष्यवक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी किए गए प्रत्येक वचन, एक वचन नहीं जिसे उन्होंने जमीन पर गिरने दिया था। उन्होंने पवित्र शास्त्र में भविष्यवाणी की गई हर बात को पूरा किया है। हर वचन सत्य है और हर वचन जीवित है। 2 थिस्सलुनीकियों 3:13 ''तुम, हे भाइयो, भलाई करने में साहस न छोड़ो।'' हम जो भी कार्य प्रभु परमेश्वर के लिए करते हैं, हमें उसे खुशी से करना चाहिए, हमें कभी भी प्रभु परमेश्वर के लिए अच्छे कार्य करने के लिए थकना या सुस्ताना नहीं चाहिए। प्रभु इस दुनिया में हमारे भले के लिए आए और उन्होंने इस धरती पर केवल अच्छे काम किए। तो आइए हम भी इस धरती पर उनके अच्छे कामों को जारी रखें, आइए हम उन लोगों को मुक्ति का मार्ग दिखाएं, जो बंधन में हैं, उन्हें अंधेरे में से प्रकाश में लाएं, बीमारों के उपचार के लिए प्रार्थना करें, आइए हम यीशु के नाम का प्रचार करें जिनके नाम से उन्हें चंगाई मिलेगी। आइए हम इस धरती पर उनके भले कामों को करने के लिए कभी सुस्ताए नहीं और न ही थकें। प्रभु ने हमें उनका नाम दिया है, इसलिए हमें इस धरती पर उनके नाम का प्रचार करना चाहिए जब तक कि इस दुनिया के लोग इसे स्वीकार नहीं कर लेते।

इससे पहले कि परमेश्वर सदोम और अमोरा को नष्ट करे, उन्होंने अब्राहम को अपनी योजना बताई। अब्राहम ने सोचा कि इस देश में बहुत से धर्मी हो सकते हैं। तो उसने परमेश्वर से पूछा, "क्या आप धर्मी को भी नाश करोंगे?" अब्राहम ने नहीं सोचा था कि इस देश में कोई धर्मी नहीं होगा। लेकिन सच्चाई यह थी कि इस देश में कोई धर्मी नहीं था। परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया कि "यदि 50 धर्मी हैं, तो मैं देश को नष्ट नहीं करूंगा। यदि 25 धर्मी हों, तो मैं देश को नाश न करूंगा। यदि 10 धर्मी हों, तो मैं देश को नाश न करूंगा।" अंत में केवल लूत और उसका परिवार बचा था और बाकी सभी नष्ट हो गए थे। हमें इस धरती पर अच्छे काम करते रहना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि प्रभु किसी विशेष भूमि को नष्ट करने से पीछे हट सकते हैं। हर घर में एक धर्मी व्यक्ति होना चाहिए। धर्मी व्यक्ति का अर्थ है, जो प्रभु परमेश्वर के लिए अच्छे काम करने से नहीं थकते। सदोम और अमोरा के विपरीत, लूत के परिवार के अलावा और कोई नहीं था, जो धर्मी थे। मत्ती 25:35–36 कहता हैं ''क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, और तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, और तुम मुझसे मिलने आए।''' एक बार जब यीशु शोमरोन गए, तो दोपहर का समय था, उनके साथ के लोग भूखे थे और उन्होंने उससे कहा कि उन्हें दोपहर के भोजन के लिए जाना चाहिए। परन्तु इसके बजाय यीशु ने उनसे कहा, "मैं अपने पिता परमेश्वर के काम करने आया हूं, यह मेरा भोजन है।" जैसे ही यीशु कुएँ के पास गए, वह सामरी महिला से मिले और उसके जीवन को बदल दिया। हर वचन कितना अर्थपूर्ण है। इस प्रकार, हमें परमेश्वर के भले कार्यों को करते हुए कभी नहीं थकना चाहिए। 'जल' के विषय में यीशु 'जीवित जल' के बारे में बात करते हैं, मत्ती 25:40 कहता हैं ''तब राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।'''' चाहे हम एक छोटा परिवार हों या एक बड़ी सभा, हमें हमेशा अपने प्रभु परमेश्वर के अच्छे कार्यों का प्रचार करने का प्रयास करना चाहिए। ये धार्मिकता के कार्य हैं और हमें इसे करते हुए कभी नहीं थकना चाहिए। इसी 'वचन' में ही सम्मान भी मिलता है और तिरस्कार भी।

गलातियों 6:9 कहता है ''हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।'' हमें अपने जीवन में कभी भी अचानक फसल नहीं मिलेगी, केवल निश्चित समय में ही

हम पर प्रभु की कृपा होगी। हमारे जीवन में गरीबी हो सकती है, हम जितना कमाते हैं उससे अधिक पैसा भी खर्च कर सकते हैं। लेकिन हमें पता होना चाहिए कि जब हमारे पास थोड़ा सा होगा और हम प्रभु के अच्छे काम करेंगे, तो हमें बेहद आशीष मिलेगी। जब हम इसे प्रभु परमेश्वर के काम पर खर्च करते हैं, तो वह स्वर्ग की खिड़कियां खोलेंगे और हमें भरपूर आशीष देंगे। इस प्रकार, यदि हमें अपने ऊपर प्रभु की कृपा प्राप्त करनी है, तो हमें इस धरती पर प्रभु परमेश्वर के लिए अच्छे कार्य करने चाहिए।

विलापगीत 2:19 ''रात के हर पहर के आरम्भ में उठकर चिल्लाया कर! प्रभु के सम्मुख अपने मन की बातों को धारा के समान उण्डेल! तेरे बाल–बच्चे जो हर एक सड़क के सिरे पर भूख के कारण मूर्च्छित हो रहे हैं, उनके प्राण के निमित्त अपने हाथ उसकी ओर फैला।'' हमें अपने मन फिराव के लिए, इस पृथ्वी पर अपने जीवन के लिए, अपने परिवारों आदि के लिए प्रतिदिन परमेश्वर यहोवा की ओर हाथ उठाना चाहिए। हर दिन हमें यहोवा को पुकारना चाहिए, तब वह सुनेंगे और उत्तर देंगे। दाऊद ने भी अपनी सारी शर्मिंदगी के बावजूद यहोवा परमेश्वर से प्रार्थना की। आइए हम पढ़ें भजन संहिता 77:2 ''संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा रहा; रात को मेरा हाथ फैला रहा, और ढीला न हुआ, मुझ में शान्ति आई ही नहीं।'' अलग–अलग तरीकों से, दाऊद ने अपने शत्रुओं से परीक्षाओं और क्लेशों का सामना किया, लेकिन उसने एक बार भी अपने हाथों को नीचे नहीं रखे, उसने केवल अपने हाथों को ऊंचा और ऊंचा उठाया और पुकारा और प्रभु परमेश्वर की स्तुति की। अच्छे समय में हमें प्रभु की स्तुति करनी चाहिए और संकट के समय में भी हमें उसी तरह प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। जब इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया जा रहा था, तब एक वेश्या जिस ने उन्हें यरीहो की शहरपनाह के पास आते देखा, यहोशू 5:1 ''जब यरदन के पश्चिम की ओर रहनेवाले एमोरियों के सब राजाओं ने, और समुद्र के पास रहनेवाले कनानियों के सब राजाओं ने यह सुना, कि यहोवा ने इस्राएलियों के पार होने तक उनके सामने से यरदन का जल हटाकर सुखा रखा है, तब इस्राएलियों के डर के मारे उनका मन घबरा गया, और उनके जी में जी न रहा।'' इस्राएलियों को यरीहो पार करते देखकर अन्यजाति यहोवा का भय मानने लगे। इसी तरह हमारे जीवन में भी, शैतान को परमेश्वर के बच्चों को देखकर डरना चाहिए, न कि परमेश्वर के बच्चों को उस से डरना चाहिए। यिर्मयाह 31:25 कहता है ''क्योंकि मैं ने थके हुए लोगों का प्राण तृप्त किया, और उदास लोगों के प्राण को भर दिया है।'' जब हम विश्वास में खड़े होते हैं और थके हुए और सुस्ताए हुए होते हैं, तो परमेश्वर हमें अपने अनुग्रह और शक्ति की आत्मा से भर देंगे। इस प्रकार, हम परमेश्वर के भले कार्यों को करने के लिए फिर कभी नहीं थकेंगे।

2 कुरिन्थियों 4:1,8,9,14,16 ''इसलिये जब हम पर ऐसी दया हुई कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं छोड़ते। हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते; सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नष्ट नहीं होते। क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा। इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।'' क्योंकि हमारा परमेश्वर सिद्ध है, वह हमें कभी भी पराजित नहीं होने देंगे, चाहे कितना ही शत्रु हमें थका दे और हम पर भारी बोझ डाल दे , फिर भी जब परमेश्वर की कृपा हम पर होगी तो हम कभी भी निराश और थके हुए नहीं होंगे। प्रभु हमेशा हमारे साथ है और वह हमें अपनी कृपा और शक्ति से ईंधन देते रहेंगे। हमारा जीवन सदैव विजयी जीवन रहेगा।

यूहन्ना 12:26 कहता है ''यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।''

यशायाह 32:2 कहता है ''हर एक मानो आँधी से छिपने का स्थान, और बौछार से आड़ होगा; या निर्जल देश में जल के झरने, व तप्त भूमि में बड़ी चट्टान की छाया।'' हमारे जीवन के हर पल में प्रभु हमारे साथ रहेंगे, वह हमें कभी नहीं छोड़ेंगे।

2 कुरिन्थियों 12:9 ''पर उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे।''

प्रभु की कृपा ही हमारे लिए काफी है। अलग–अलग तरीकों से हमारे भीतर कमजोरी हो सकती है, लेकिन परमेश्वर का कार्य कभी समाप्त नहीं होता, हमारी कमजोरी में केवल उनकी कृपा ही हमारे लिए पर्याप्त है। उनकी कृपा सदैव हमारा ध्यान रखेगी। हम सभी में कमजोरी हो सकती है, लेकिन हमारे जीवन में केवल प्रभु की कृपा ही पर्याप्त है, हम अपनी स्तुति, प्रार्थना, प्रभु के लिए अच्छे कार्य करते रहें। वह हमारी हर कमजोरी को मजबूत करेंगे और हमें एक धर्मी और विजयी जीवन जीने में मदद करेंगे।

यह संदेश हमारे जीवन में आशीष लाए! प्रभु की स्तुति हो!

पास्टर सरोजा म।